अन्य गठबन्धनों से आगे जनता के राजनैतिक सशक्तिगरण हेतु व्यवस्था परिवर्तन के सदस्यों के वोटों से चुने गऐ प्रत्याशी के द्वारा
''व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन'' को सत्ता में लाकर ग्राम स्वराज'' और वार्ड स्वराज लाना हमारी विशेषता है।

व्यवस्था परिवर्तन गठबंधन (स्थापित 23.01.2000)
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जन्म दिवस
CHANGE OF SYSTEM / निजाम का बदलाव

पंजीकृत कार्यालय बी–11, जी–3, आम्रपाली कान्हा सोसाइटी, राष्ट्रीय राजमार्ग–2, चौमुहा, मथुरा, भारत, पिन–281406
संरक्षक – डा० शिवराम सिंह गौर, फोन : 9453286099
संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष – संसार चन्द्र, फोन : 8800901448 व्हाट्सप : 9311154194
कोषाध्यक्ष – अनुज कौशिक, फोन : 8287966427

Website : www.vyavasthaparivartan.org **Email : changeofsystem8@gmail.com**

महाकुम्भ 2025 विशेषांक, न्यूनतम साझा कार्यक्रम

लक्ष्यः– नए विचारों को अपनाने वाली सामाजिक व्यवस्था, जिसमें जीवन्त लोकतन्त्र द्वारा सरकार बने, जो जनता के प्रति जबाब देह हो । ''वसुधैव कुटुम्बकम्''

Aim :- Open Society to make world citizens who will work to build vibrant and inclusive democracy whose government are accountable to their people. "Whole World is one family." "One World, One Government, One Future"

संसार चन्द्र, विद्यार्थी, विचारक, प्राकृतिक वाद (**Naturalism**)

प्रकृतिक वाद का मूल आधार समस्त भारतीय दर्शन, चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त दर्शन हैं। इनमें से भी प्रकृति के बारे में ज्यादा लिखने वाले चार्वाक, सांख्य के शंकराचार्य का अद्वैत और रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत हैं। वस्तुतः सत्य तो केवल एक ही होता है पर हमारे देखने समझने के कोण अलग होने से वैचारिक भिन्नता आती है।

उदाहरण के लिए यदि एक हाथी के बारे में तीन नेत्रहीन व्यक्ति जानकारी लेने जाएँ, तो उसकी सूँड़ छूने वाला उसे मोटा पाईप, उसकी पूँछ छूने वाला रस्सी और कान छूने वाला व्यक्ति उसे बड़ा सूप या पंखा बताएगा। इसीलिए किसी ज्ञान को पाने के हेतु, हमें लिखित या कही हुई बात, अंध विश्वास की तरह न मान कर अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए। हमें हमेशा एक नियम याद रखना चाहिए। ''एकमः सत्य, विप्रा बहुदा वदन्ति''।

यानी सत्य तो एक ही होता है परन्तु ज्ञानी लोग उसे अलग प्रकार से कहते हैं। अतः हम जो कुछ भी लिखें परन्तु, पाठक गण अपने विवेक का ऊपयोग करके हमारे भाव, भावना को महसूस करने का प्रयास करें।

रामानुजाचार्य प्रकृति को ईश्वर का अंश और ईश्वर द्वारा संचालित मानते हैं। उसी तरह जिस तरह शरीर आत्मा द्वारा संचालित होता है। प्रकृति में तीन तत्व तेज, जल, पृथ्वी होते हैं उनमें क्रमशः तीन गुण सत्व, रज, तम होते हैं। धीरे धीरे ये तीनों तत्व परस्पर सम्मिलित हो जाते हैं और उनसे भौतिक संसार बनता है।

– पर्यावरण परिवर्तन से जनता की रक्षा से ही जनता को सुरक्षा मिलेगी ।

– हरे भरे खेत, पहाड़, जंगल और साफ शुद्ध पानी की नदियाँ, झीलें, तालाब और कुऐं बना कर उनकी रखवाली करना, सरकार और नागरिकों का पहला कर्तव्य है। हर बच्ची और बच्चा जब एक पेड़ लगाएगा तब ही उसे वोट का अधिकार मिलेगा।

– आज की व्यवस्था है

लालची डाक्टर (वैद्य, हकीम), दवा करे तज़वीज।
भरपूर कमाई करती रहे, सदा बिस्तर पर रहे मरीज।

व्यवस्था परिवर्तन है भला डाक्टर (वैद्य, हकीम), दवा करे तजवीज,
सभी बीमारियाँ जड़ से मिटें, स्वस्थ, खुश, सन्तुष्ट रहे मरीज।

– प्रकृति मानव को जीने के लिए सामान्य तापक्रम का वातावरण, धूप, हवा, पानी, फल, सब्जी, अनाज, कपास बहुत कुछ देती है। कृतज्ञ मानव भी श्रमदान, सुरक्षा दान, ज्ञान दान, धन दान, अंग दान और बलिदान (कुर्बानी) करते हैं। कुम्भ का मेला दान का अमृत पाने का सामूहिक समारोह था। अब लोग केवल गंगा में नहा कर चले आते हैं। हर नागरिक को प्रति दिन कुछ दान अवश्य करना चाहिए। केवल महादानी को ही समाज का नेतृत्व सौंपना चाहिए। अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी ने समाज में आर्थिक समानता के लिए कहा था कि ''यदि पूँजीपतिओ ने ट्रष्ट बना कर पूँजी का वितरण समाज हित में नहीं किया तो खूनी क्रान्ति को रोका नहीं जा सकता''।

– इसे समझने के लिए ऊपर लिखा हमारी वेबसाईट पूरी पढ़िए और इसमें हिन्दी भाषा में प्राकृतिक दर्शन और अंग्रेजी भाषा में (Natural Philosophy) पुस्तक में दिए गए ज्ञान के आधार पर सम्पत्ति के उत्तराधिकार की अधिकतम सीमा एक किलो सोना ''संविधान संशोधन'' करते हुए (शेष धन का ट्रष्ट बना कर पूँजीपति उद्योग/व्यापार करें) बजाज, बिड़ला, टाटा, अम्बानी, अजीम प्रेम जी, नारायण मूर्ति, अडाणी, करोड़ों भारतीय नागरिकों की तरह रोज़गार देने वाली शिक्षा में निवेश करें साथ ही नई राजनीति, प्रकृतिकवाद के लक्ष्य'' व्यवस्था परिवर्तन करने के लिए राज्य सरकार और केन्द्र सरकार में गठबन्धन को 2/3 बहुमत से जिताईए।

– नीलामी में टिकटें खरीदकर, सरकारें बनाई, बार बार, पर ''भ्रष्ट व्यवस्था'' से पीड़ित, जनता रही परेशान, लाचार ।

– अब व्यवस्था परिवर्तन के सदस्य, वोट से तय करेंगे टिकट, यही ''मन्त्र'' है, ''व्यवस्था परिवर्तन'' के जनता सशक्तिकरण का सार। बहुत हुई बेरोज़गारी और मंहगाई की मार, अबकी बार व्यवस्था परिवर्तन की सरकार।

– सरकारें तो बदली बार बार, व्यवस्था बदलो अबकी बार
बहादुर शाह, नानाजी, लक्ष्मी बाई, सुभाष, अम्बेडकर, अशफाक उल्ला,
भगत सिंह, लोहिया, जयप्रकाश, जनता को अधिंयारे में देते प्रकाश।

इन्सान ने भाषाएं बनाई पर लिखने और बोलने वाली भाषाओं में अनेकों कमी है। उदाहरण : श्री कृष्ण ने बालपन में ही माता यशोदा को उच्चारण में हल्के से बदलाव से भ्रमित कर दिया था। चुरा कर मक्खन खाने के आरोप लगने पर कन्हैय्या ने कहा –

मैय्या मोरी, मैं नहीं माखन खायो। पर चोरी साबित होने पर मानते हैं। मैय्या मोरी, मैंने ही माखन खायो ।

श्री कृष्ण ने इसी प्रकार महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य का अपने पुत्र अश्वत्थामा से हद से ज्यादा प्रेम देख कर, उन्हें मारने की योजना बनाई। युधिष्ठिर हमेशा सच बोलते थे, यह द्रोणाचार्य को विश्वास था। तब श्री कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध में द्रोणाचार्य के नजदीक तक ले गए, और दूसरी तरफ नज़दीक में अश्वत्थामा नाम के एक हाथी को मरवा दिया, इसकी जानकारी युधिष्ठिर को हो गई क्योंकि उसने अश्वत्थामा हाथी को मरते देखा था। फिर श्री कृष्ण ने अपने लोगों से जोरदार शोर मचवा दिया अश्वत्थामा मारा गया''। यह सुन कर द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से पूछा क्या अश्वत्थामा मारा गया ? युधिष्ठिर ने दो वाक्यों में जवाब दिया पहला वाक्य ''हाँ अश्वत्थामा मारा गया। जिसे द्रोणाचार्य ने सुना । तब श्री कृष्ण ने जोरदार आवाज़ में ढोल नगाड़े बजवा दिए। इससे द्रोणाचार्य युधिष्ठिर का दूसरा वाक्य नहीं सुन पाए जिसमें उसने कहा था ''नरो व कुन्जरो '' यानि आदमी या हाथी''। पुत्र अश्वत्थामा के मरने के सदमें में द्रोणाचार्य ने तब अपना धनुष छोड़ दिया और तुरन्त तलवार से उनका सर काट लिया गया।

अतः ''सत्य'' की अधूरी जानकारी से द्रोणाचार्य जैसा महावीर मारा गया।

<u>लिखित भाषा की अधूरी परिभाषा से प्राचीन अखण्ड भारत का पतन</u>

प्राचीन काल में, सभी प्रकार के अच्छे गुणों वाले, जिस में ब्रह्मचर्य (यानि निरन्तर, ब्रह्म के बारे में खोजबीन करने वाले) गुण भी शामिल था, ऐसे बच्चों, बच्चिओं को गुरुकुल में, (5 वर्ष की उम्र के बाद), रह कर ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा राजा के तरफ से थी। हनुमान चालीसा में कहा गया है ''जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ''। हनुमान जी ने कर्तव्य निष्ठा के कारण शादी नहीं की। तब धीरे–धीरे ब्रह्मचर्य की परिभाषा बदल कर हो गई कि जो ''कोई शादी न करे वह ब्रह्मचारी''। फिर उसमें कोई गुण न हो। बल्कि अन्य ढेर सारे अवगुण बुराईयाँ भी हों तो तब भी उसे ब्रह्मचारी मानाना यह गलत परिभाषा आजकल भी समाज में मानी जाती है।

तब गलत परिभाषा के कारण गुरुकुलों में ऐसे बच्चे बच्ची प्रवेश पाने लगे, जो केवल शादी न करने का ब्रह्मचारी गुण लिए हुए थे । वे झूठे, धोखेबाज, कायर, मक्कार, लालची, आलसी आदि अवगुणों के होने पर भी गुरुकुल में पढ़े और पढ़ाई पूरी करने पर वे ही देश के राजा, सेनापति, मन्त्री आदि बने । विदेशी हमलावरों ने इन दुर्गुणों वाले राजाओं और सेनापतिओं को हरा दिया और अखंड भारत खंड–खंड होकर गुलाम हो गया। इसी बात को एक शायर ने कहा –

अखंड भारत को अपनों ने ही डुबोया, विदेशीयों में नहीं कुछ दम था।
अखंड भारत की कश्ती जहाँ डूबी, पानी वहाँ सबसे कम था।

लिखित भाषा की इसी प्रकार की कमियों के कारण अपने भाव तथा भावनाओं को अत्यधिक सही तरीके संप्रेषित करने के लिए हम आगे भी शेर, शायरी, गीत, कविता आदि का उपयोग करेंगे।

<u>अहिंसा तथा अन्य अनेक शब्दों की परिभाषा में घालमेल</u>

अहिंसा शब्द का मूल भाव प्राकृतिक नियमों के खिलाफ न जाना (हिंसा न करना) था । अर्थात अहिंसा का मतलब प्राकृतिक नियमों को समझ कर उसके अनुरूप व्यवहार करना था, है और रहेगा। भगवान बुद्ध ने प्राकृतिक नियमों पर आधारित धम्म (जिसे अब धर्म का नाम दे दिया) कर्मकान्ड वाली पूजा पद्धति नहीं थी बल्कि, प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य में जीवन जीने की पद्धति थी।

संसार में अनेक **Religion** या मज़हब तथा भारत के सनातनी, हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, सिख, जैन, बौद्ध ''पंथ '' है उन्हें भी ''धर्म'' के नाम से गलती से पुकारा जाता है, यह कालान्तर में (हजारों वर्षों के बाद) भाषा का भटकाव है।

''धर्म'' शब्द को ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी / शब्द कोष में, **Eternal Natural Laws of cosmos** यानि ब्रह्माण्ड के शास्वत प्राकृतिक नियम कहा गया है।

व्यवहार में भी हम देखें तो पाएंगे कि, चन्द्र गुप्त मौर्य ने बाद में जैन पंथ, महान सम्राट अशोक (सही नाम था असोक) ने बौद्ध धम्म (पंथ) और सम्राट हर्षवर्धन ने बौद्ध धम्म (पंथ) अपनाने पर भी, अहिंसा को अपनाने पर भी, अपनी सेनाएं समाप्त नहीं की थी।

परन्तु अहिंसा की गलत परिभाषा ने कालान्तर में यह भावना पैदा की ''यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा गाल भी थप्पड़ के लिए उसके आगे बढ़ा दो ''। इसी कारण भारत के पढे लिखे तथा कथित शिक्षित परन्तु व्यवहारिक मूर्ख शासक वर्ग ने तीन मूर्खतापूर्ण निर्णय लिए।

1. जो नागरिक अखंड भारत की भौगोलिक सीमा से बाहर जायेगा यानि परदेश जायेगा उसे जाति और समाज से बाहर / बहिष्कृत कर देंगे।
2. श्री कृष्ण ने गीता में अध्याय 4 श्लोक 13 में स्पष्ट कहा है 4 वर्ण (एक वर्ण / वर्ग में अनेक जातियाँ होती है) मैनें जन्म नहीं बल्कि कर्म के आधार पर बनाऐं हैं। परन्तु शासक वर्ग ने कर्म (**Profession**, व्यवसाय, कारीगरी, कला) पर न करके जन्म के आधार पर वर्ण/जाति के आधार पर बना कर, समाज का बंटवारा किया। परिणाम स्वरूप विदेशी हमलों में हम हारते चले गए।
3. अस्त्र–शस्त्र पर अनुसंधान बन्द कर दो। क्योंकि अहिंसा परम धर्म है।

परन्तु भारत के बाहर, अस्त्र–शस्त्र और सैन्य राणनीति पर अनुसंधान जारी रहे। जब सिकंदर भारत के दरवाजे पर आया तो स्वार्थी, देशद्रोही, अंभीक ने उससे सहयोग किया। सिकंदर की पूरी सेना घुड़सवार थी और लम्बे भाले लिए हुए थी, जबकि पोरस हाथी पर था और उसकी पैदल सेना केवल 3 फिट की तलवार से युद्ध करने चली। परिणाम तो हार होनी ही थी। तभी सिकन्दर को भारत के एक साधू से यह श्रेष्ठ ज्ञान मिला ''चाहे जितनी सम्पत्ति जमा कर लो, एक दिन तुम्हें मरना ही है, तब यह धन सम्पत्ति यहीं रह जाएगी और तुम खाली हाथ ही मिट्टी में मिल जाओगे। ''कुछ हफ्तों बाद यही हुआ। सिकंदर की शव यात्रा में उसके खाली हाथ लटक रहे थे और सारे देशों में लूटी हुई सम्पत्ति धन यहीं पर रह गया''।

बाबर जब खानवा के युद्ध को चला, तो उसकी सेना में बारूदी तोपें थी, जबकि शरीर पर 80 धावों वाले राणा साँगा तलवार लिए घुड़सवार थे। परिणाम बड़े शौर्य के नहीं, उन्नत हथियार के पक्ष में हुआ।

प्लासी की लड़ाई में अंग्रेजी सेना के पास राइफलें और पिस्तौलें थी, जबकि सिराजुद्दौला के पास तोपें तो थी। परन्तु देशद्रोही मीर जाफर ने तोपों के बारूद को रात में खुला छोड़ दिया था जो बारिश में भीग गया था। तो परिणाम हार होना ही था। इस पर मैं पिछले पेज पर लिखा शेर दोहराने की इज़ाजत पाठकों से माँग रहा हूँ यानि

अखंड भारत को अपनों ने ही डुबोया, विदेशीयों में नही कुछ दम था।
अखंड भारत की कश्ती जहाँ डूबी, पानी वहाँ सबसे कम था।

<u>भारत की आज़ादी अहिंसा के आन्दोलन से नहीं मिली थी।</u>

16 जनवरी 1946 को भारत की नौ सेना में जहाज पर **John F. Faber** कमान्डर थे। मेरे इंग्लेन्ड के 4 वर्षों के प्रवास के दौरान 1968 में लार्ड क्लाईव के महल (जिसे तब राजनैतिक, सामाजिक बैठकों के लिए उपयोग में लाया जाता था) मैं पहली बार उनसे मिला था । उन्होंने मुझे खुद बताया कि मेरा विवाह जनवरी 1946 में हुआ था और विवाह के तुरन्त बाद ही नौसेना ने मुझे भारत भेज दिया। नई नवेली पाओलीन नाम की पत्नि के विछोह के दुखः में मेरा मूड़ बहुत बिगड़ गया । मैंने इसी लिए भारतीय नौसेनिकों से बहुत ज्यादा दुर्व्यवहार किया, फलस्वरूप बगावत / क्रांन्ति हो गई। तार द्वारा यह सूचना इंगलैन्ड के प्रधान मन्त्री ऐटली तक पहुँची । उन्होनें तुरन्त इंगलैन्ड की संसद की आपातकालीन बैठक 18 जनवरी को बुलाई। उस बैठक में प्रधान मन्त्री ऐटली ने प्रस्ताव दिया ''अब भारत को आजादी देना है''। पूरे दिन दर्जनों प्रमुख नेताओं ने ऐटली से सवाल पूँछा कि हम 250 वर्षों से भारत में कमाई कर रहे हैं, आप आज ही यह निर्णय क्यों लेना चाहते हो कि भारत को आजाद कर दें ? शाम 4 बजे ऐटली जवाब देने खड़े हुए। उन्होंने एक वाक्य में कहा ''भारत की सेना में अधिकांश सैनिक भारतीय मूल के हैं और अब उसे हम **control** नहीं कर सकते''। इसके बाद मतदान हुआ और भारत की आजादी का प्रस्ताव पास हुआ। इसके क्रियान्वयन के लिए पहिले केबिनेट मिशन, फिर विभाजन के लिए षड्यन्त्र करके आजादी देने के लिए लार्ड माउन्ट बेटन को भारत भेजा गया। कोई भी खोजी पत्रकार या राजनैतिक कार्यकर्ता भारत तथा इंगलेन्ड की संसद की लाईब्रेरी में जाकर 18 जनवरी 1946 की **House of Commons** की **Debate** में यह सच्चाई जान सकता है। लार्ड माऊन्ट बैटन से मेरी पहली मुलाकात 2 अक्टूबर 1968 को सेन्टपॉल कैथ्रीडल में हुई, जहाँ वो गाँधी जयन्ती की सभा में आये थे। वो 1969 में लन्दन के **Clariges Hotel** में प्रधान मन्त्री इन्दिरा मिलने जब गए तब इन्दिरा जी ने मुझे भी बुलाया था। अतः दोबारा मुलाकात हो गई और बहुत सी बातें मालूम हुई। अतः भारत की तथा कथित ''आज़ादी'' का पूरा कच्चा चिट्ठा मुझे मालुम है।

सभी पत्रकारों को यह तो मालुम ही है कि आजादी के बाद 1956 में पूर्व प्रधान मन्त्री ऐटली बंगाल के गर्वनर से मिले तो उनसे सवाल पूँछा गया कि आपने भारत को आजादी क्यों दी? उनका जवाब था ''सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के युद्ध के कारण भारत की अंग्रेजी सेना में आजादी की भावना जग गई थी। उसे काबू करना संभव नहीं था। उनसे फिर सवाल पूछा गया महत्मा गाँधी के अहिंसात्मक आन्दोलन का भारत की आजादी में क्या प्रभाव था ? उनका स्पष्ट जबाव था **"Very Minimal"** यानि बहुत जरा सा '' ।

मैं उम्मीद करता हूँ अहिंसा का गुण गान करने वालों को सच्चाई मालूम हो गई होगी। वे दैनिक जागरण 31 जनवरी 2005 पेज 9 कालम 2, 3, 4, निम्न में सचाई पढें ।

दैनिक जागरण 31 जनवरी 2005 पेज 9 कालम 2, 3, 4,

'नेताजी की विचारधारा महात्मा गांधी को थी मंजूर'

प्रेट्/भाषा, नई दिल्ली

आजादी हासिल करने का महात्मा गांधी का तरीका अलग था व सुभाष चंद्र बोस का अलग, इसमें कोई नई बात नहीं है, लेकिन नेताजी के करीबी सहयोगी का दावा है कि आजादी की लड़ाई जब समाप्त होने वाली थी, तब बापू ने नेताजी की विचारधारा को स्वीकृति दी थी। नेताजी के साथ थाईलैंड में निजी सचिव रहे सेठ त्रिलोक सिंह ने कहा कि आजादी मिलने से कुछ ही दिन पहले वह गांधीजी से मिलने गये थे। गांधी जी ने कहा था कि सुभाष के अनुसार देश को आजाद कराने के लिए हमें खून बहाना होगा। बापू ने कहा कि यदि उन्हें पता होता

आजाद हिंद फौज के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस के करीबी सहयोगी का दावा

कि आजादी हासिल करने का यही एकमात्र तरीका है तो उन्होंने काफी पहले ही इसे स्वीकार कर लिया होता।

84 वर्षीय त्रिलोक सिंह बैंकॉक में रहते हैं। हाल ही में भारत यात्रा के दौरान उन्होंने बताया कि नेताजी के निधन के बाद लंबे समय तक लोग इसे मानने को तैयार नहीं थे। सुभाष छद्मवेश धारण करने की कला में माहिर थे। सभी मानते थे कि वह अंग्रेजों को मूर्ख बनाकर वापस आ जाएंगे। उन्होंने बताया कि गांधी जी बंटवारे के खिलाफ थे। वह जिन्ना के पास समझौते का फार्मूला लेकर गए, लेकिन जिन्ना ने उनसे कहा कि वह नेताजी का इंतजार करें।

प्रकृति लगातार बदल कर विकास कर रही है। अतः लिखित भाषा की भी मंशा या भाव समय के साथ बदलते रहनें में ही सबाका भला है। प्रकृतिक वाद का सारांश यह है कि हमें कागज पर लिखी या किसी के भी द्वारा कही बात पर अन्ध विश्वास न करके अपने विवेक, व्यावहारिक ज्ञान के अनुसार कार्य करना चाहिए।

''अखंड भारत संगम'' व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन के अन्तर्गत प्राकृतिक वाद को मानने वाली राजनैतिक पार्टी है। इसका विचार है कि दक्षेस (**SARC**) देशों का बंटवारा ही इनकी आर्थिक समस्याओं का मूल कारण है। आपस में बात करके, राजनैतिक और प्रशासनिक दखलन्दाजी से सुरक्षित, युरोप (फ्रांस और जर्मनी) की तरह संयुक्त उद्योग लगा कर, युरोप की तरह ही दक्षेस भी विश्व की प्रमुख शक्ति बन सकता है। फिलहाल यह पार्टी व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन के आफिस से ही सबसे सम्पर्क कर रही है। इसका वेवसाईटः **www.akhandbharatsangam.org** तथा ई–मेल : **akhandbharatsangam101@gmail.com** है।